**International Journal of Advanced Education and Research**
**ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34**
**Received: 14-10-2020; Accepted: 29-10-2020; Published: 18-11-2020**
**www.alleducationjournal.com**
**Volume 5; Issue 6; 2020; Page No. 55-56**

# रीवा जिले के शासकीय प्रारंभिक शिक्षा स्तर वाले विद्यालयों के शिक्षको की विषयगत योग्यता का अध्ययन

**ऋतु सिंह परिहार**
**श**ोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

**सारांश**
शिक्षा के हर क्षेत्र में समस्यायें है किन्तु यदि समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट होता है, तो शिक्षा के प्रारंभिक स्तर की शैक्षिक समस्याओं के कारण को पता लगाने के लिए शोधार्थी ने रीवा जिले के सभी विकासखण्ड़ों के शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों से प्रत्येक विकासखण्ड़ से 06–06 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयन किया है। जिसका उद्देश्य है कि शासकीय प्रारंभिक स्तर के लिए विद्यालयों के शिक्षकों के विषयगत योग्यता का अध्ययन करना है। परिणाम स्वरूप शोधार्थी ने पाया कि शासकीय प्रारंभिक स्तर के शिक्षकों की विषयगत योग्यता का अभाव है – अर्थात् शासकीय प्रारंभिक स्तर के शिक्षकों की विषयगत योग्यता अच्छी नही है जिसके कारण शासकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों का नामांकन दर प्रभावित हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों के शासकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की विषयगत योग्यता में कोई सार्थक अन्तर परिलक्षित नही हुआ है।

**मूल शब्दः** प्रारंभिक शिक्षा, शिक्षको, विषयगत योग्यता

## प्रस्तावना
मध्यप्रदेश ही नही अपित पूरे देश में शिक्षा जगत असीमित समस्याओं से घिरा हुआ है, समझ में नही आता कि समस्याएँ कहॉ से शुरू होती है कहा इन समस्याओं की जड़े है। समस्याओं के जाल में पूरा देश फॅसता हुआ नजर आ रहा है। यदि एक समस्या पर गहराई से चिंतन किया जाय तो समस्या के अंदर समस्या पैदा होती है। वैसे तो शिक्षा के हर स्तर पर समस्याएँ हैं किन्तु यदि समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट होता तो, शिक्षा प्रारम्भिक स्तर की शैक्षिक समस्याओं के कारण। शैक्षिक उपलब्धि की समस्या तो है ही, मध्यप्रदेश के शासकीय विद्यालयों में वर्तमान में नामांकन में गिरावट एक गंभीर समस्याओं के रूप में उभर कर सामने आ रही है। वर्तमान में निजी विद्यालयों की संख्या बढ़ रही है, जिसके कारण सम्भवतः शासकीय विद्यालयों का नामांकन प्रभावित हो रहा है। निजी विद्यालयों के प्रभाव से सबसे ज्यादा सरकारी विद्यालयों का शिक्षा का प्रारंभिक स्तर प्रभावित है। शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर पर बात करने से पहले शिक्षा को जान लेना आवश्यक है।

''शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है, जो अच्छी आदतों द्वारा बच्चों में अच्छी नैतिकता का विकास करती है।'' (प्लेटो)

''शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है, जिस पर वह पहुँच सकता है।''(कॉण्ट)

''हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है, जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धी का विकास होता है, और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।'' (स्वामी विवेकानन्द)

## शोध के उद्देश्य
1. शहर के शासकीय एवं निजी विद्यालयो के शिक्षको की विषयगत योग्यता का अध्ययन।
2. ग्रामीण शासकीय एवं निजी विद्यालयो के शिक्षकों की विषयगत योग्यता का अध्ययन करना।
3. शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षको के विषयगत योग्यता का अध्ययन करना।

## परिकल्पनाएँ
$H_1$ –शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में घटती हुई विद्यार्थियों की संख्या का कारण शिक्षकों में विषयगत योग्यता का अभाव है।

$H_2$ –शहर के शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों एवं शहर के निजी प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की विषयगत योग्यता में कोई सार्थक अंतर नही है।

$H_3$ –गॉव के शासकीय प्रारंभिक स्तर के एवं निजी प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षको की विषयगत योग्यता में कोई सार्थक अंतर नही है।

## न्यादर्श
शासकीय एवं निजी विद्यालय के शिक्षक 54–54

## उपकरण
शिक्षक प्रश्नावली

## परिसीमन
रीवा जिले के सभी (9) विकासखण्ड

## विश्लेषण एवं व्याख्या

**सारणी 1:** शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं निजी विद्यालय के शिक्षको के प्राप्तांक

| विद्यालय प्रकार | शिक्षकों की संख्या | पूर्णांक | मध्यमान | मानक विचलन | मानक त्रुटि | क्रांतिक अनुपात | स्वतंत्रता की कोटि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शहरीप्रारंभिक शासकीय विद्यालय | 27 | 40 | 7.87 | 3.35 | 1.17 | 1.26 | 52 |
| शहरी प्रारंभिक निजी विद्यालय | 27 | 40 | 14.17 | 3.7 | | | |

**व्याख्या**

उक्त सारणी से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के शासकीय प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षको के प्राप्तांक का मध्यमान 07.87 जो शहरी क्षेत्र के निजी प्रांरभिक विद्यालयों के शिक्षको के प्राप्तांक के मध्यमान 14.17 से कम है। पूर्णांक 40 की तुलना में उक्त दोनो ही मध्यमान निराशाजनक है किन्तु विषयवस्तु के ज्ञान के मामले में निजी विद्यालयों के शिक्षको की उपलब्धि शासकीय विद्यालयों के शिक्षको की तुलना में कुछ ज्यादा अच्छी प्रतीत हो रहा है।

स्वतंत्रता के अंश 50 पर (सारणी अनुसार) 0.05 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर t का मान क्रमशः 2.01 तथा 2.68 है यहाँ पर स्वतंत्रता में 52 अंक t मान होता। चूंकि सारणी में स्वतंत्रता के अंश 52 हेतु t मान का उल्लेख नही है इसलिए शोधार्थी द्वारा 50 अंश पर t मान देखा गया है। गणना से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 1.26 है जो उक्त दोनो स्तर (0.05 तथा 0.01) के t मान 2.01 तथा 2.68 से कम है। अतः दोनो समूह (शहरी शासकीय तथा शहरी निजी विद्यालयों के शिक्षक) की उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही है। अतः शोधार्थी की परिकल्पना ''शहर के शासकीय प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों एवं शहर के निजी प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षको की विषयगत योग्यता में कोई सार्थक अंतर नही है।'' स्वीकृत होती है।

**सारणी 2:** ग्रामीण शासकीय प्रारंभिक एवं ग्रामीण निजी क्रमांक विद्यालय के शिक्षकों विषयगत योग्यता में अंतर की सार्थकता

| विद्यालय प्रकार | शिक्षकों की संख्या | पूर्णांक | मध्यमान | मानक विचलन | मानक त्रुटि | क्रांतिक अनुपात | स्वतंत्रता की कोटि $(n_1-1) + (n_2-1)$ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्रामीण शासकीय प्रारंभिक विद्यालय | 27 | 40 | 8.71 | 3.94 | 0.85 | 4.25 | 52 |
| ग्रामीण निजी प्रारंभिक विद्यालय | 27 | 40 | 12.32 | 4.74 | | | |

**व्याख्या**

शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों के प्राप्ताकों का मध्यमान 8.71 निजी विद्यालयों के शिक्षकों के प्राप्तांको के मध्यमान 12.32 से कम है। उक्त प्राप्तांक मध्यमान पूर्णांक 40 में है जो दोनो समूहों का कम है। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि स्वतंत्रता की कोटि 52 पर 0.05 तथा 0.01 स्तर पर t मान क्रमशः 2.01 तथा 2.68 है, जबकि क्रान्तिक अनुपात का मान 4.25 है जो 2.01 तथा 2.68 दोनो से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि दोनो समूहों (शासकीय प्रारंभिक तथा निजी प्रारंभिक विद्यालय के शिक्षकों) की विषयगत योग्यता में सार्थक अंतर है। निजी विद्यालय के शिक्षको की विषयगत योग्यता शासकीय विद्यालय के शिक्षको से बेहतर है। अतः शोधार्थी की परिकल्पना ''गॉव के शासकीय प्रांरभिक स्तर के एवं निजी प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षको की विषयगत योग्यता में कोई सार्थक अंतर नही है।'' स्वीकृत होती है।

## निष्कर्ष

आकड़ो के विश्लेषण से प्राप्त परिणामो के आधार पर शोध के जो निष्कर्ष प्राप्त हुए है वे इस प्रकार है।

1. शासकीय प्रारंभिक स्तर के शिक्षको की विषयगत योग्यता अच्छी नही है। अर्थात शासकीय प्रारंभिक स्तर के शिक्षको के विषयगत योग्यता का अभाव है, जिसके कारण शासकीय विद्यालयों में विद्यार्थियो की नामांकन दर प्रभावित हुई है।
2. शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षको की विषयगत योग्यता में सार्थक अंतर परिलक्षित नही हुआ है अर्थात दोनो की विषयगत योग्यता की दृष्टिकोण समान है।
3. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षको की विषयगत योग्यता में कोई सार्थक अंतर परिलक्षित नही हुआ है। अर्थात् दोनो की विषयगत योग्यता समान है।

## सुझाव

1. शासकीय शिक्षको को विषयवस्तु का अध्ययन करना चाहिए।
2. शासकीय शिक्षको को कक्षा में जाने के पूर्व पाठ योजना तैयार करना चाहिए।
3. प्रारंभिक स्तर के शासकीय शिक्षको को शैक्षिक पेडागॉजी का नियमित अध्ययन करना चाहिए।
4. प्रारंभिक स्तर के शासकीय शिक्षको को शिक्षण कौशल, शिक्षण तकनीकी, शिक्षण विधियो तथा शिक्षण के नये–नये उपागम से जुडे रहना चाहिए और अपने कक्षा में उनका उपयोग करना चाहिए।
5. शिक्षको को अपने नैतिक दायित्व का नित्य निर्वहन करना चाहिए।
6. शिक्षको को अपने विषय के ज्ञान को समृद्ध करने के लिए अपने साथी शिक्षको से खुली चर्चा करने की आवश्यकता है।

## संदर्भ


1. www.mpeducationportal.gov.in
2. Dikshantias.com (2019) ''प्राथमिक शिक्षा की चिंताजनक तस्वीर। दीक्षांत आई0ए0एस0 एजुकेशन सेंटर, जनवरी 24, 2019
3. भदौरिया, अखिलेश सिंह (2016). ''शिक्षा मनोविज्ञान'' कल्पना पब्लिकेशन, चॉद पोल बाजार, जयपुर ैठछ 978.93.85181. 19.1
4. खान, तैयब (2016) ''राजकीय उच्च प्रा0वि0 जामड़ा पं0स0 सम में कक्षा–6 के विद्यार्थियो में समय से पूर्व पलायन करने की समस्या एवं उसका समाधान'' शोध पत्रिका 2015–16 डाइट, जैसलमेर, राजस्थान।
5. अग्रवाल, एस0 (2000) ''पहुँच एवं ठहराव के झुकाव का अध्ययन करना'